

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 6 अध्याय 6: दक्ष की कन्याएँ

14 September 2026



पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



ब्रह्मा द्वारा शान्त किए जाने पर प्रजापति दक्ष साठ कन्याएँ उत्पन्न करते हैं और उन्हें धर्म, महर्षि कश्यप तथा चन्द्रदेव को विवाह में देते हैं — और इन्हीं सम्बन्धों से देवों और ऋषियों से लेकर पक्षियों, पशुओं और पृथ्वी की वनस्पतियों तक समस्त जीव-जगत् की उत्पत्ति होती है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गडम् में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। दक्ष के पुत्रों के मुक्ति के लिए प्रस्थान के पश्चात्, षष्ठ स्कन्ध का यह छठा अध्याय वैराग्य से हटकर सृष्टि की ओर मुड़ता है। ब्रह्माजी के आश्वासन से प्रेरित होकर दक्ष साठ पुत्रियों को जन्म देते हैं और धर्म, महर्षि कश्यप, चन्द्रदेव तथा अन्य ऋषियों के साथ उनका विवाह सम्पन्न कराते हैं; इन्हीं की

असंख्य सन्तानों से तीनों लोक हर ओर से भर उठते हैं। श्रीशुकदेव यह विशाल वंशावली राजा परीक्षित को सुनाते हैं — देवों और असुरों की, पक्षियों और पशुओं की, नागों और गन्धर्वों की, और स्वयं वनस्पतियों तथा नक्षत्रों की माताओं का वर्णन। किन्तु नामों की इस विशाल सूची में एक उज्ज्वल सूत्र गुँथा हुआ है: अदिति की इसी सन्तति-परम्परा में साक्षात् परमेश्वर स्वयं अपना अंश प्रकट करेंगे, जिससे सृष्टि का लेखा भी भगवद्-स्मरण बन जाता है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 6 (षष्ठ स्कन्ध)
- अध्याय: 6 (षष्ठ अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: दक्ष की कन्याओं की सन्तति
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव, राजा परीक्षित को सुनाते हुए
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; और बाह्य कथा में नैमिषारण्य के ऋषिगण
- मुख्य स्थल: गंगा-तट जहाँ परीक्षित सुन रहे हैं, जहाँ ऋषि लोकों की सृष्टि का वर्णन करते हैं
- केन्द्रीय विषय: दक्ष की साठ कन्याएँ, उनके विवाह, और वह विशाल सन्तति जिनके द्वारा तीनों लोक भर गए
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 6, अध्याय 6, श्लोक 1-45
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

दक्ष की साठ कन्याएँ

स्वयम्भू ब्रह्मा द्वारा शान्त एवं समझाए जाने पर, प्राचेतस-पुत्र दक्ष ने अपनी पत्नी असिकनी से साठ कन्याएँ उत्पन्न कीं, जो सब अपने पिता के प्रति अत्यन्त स्नेहवती थीं। उन्होंने दस कन्याएँ धर्म को दीं; तेरह मरीचि-पुत्र महर्षि कश्यप को; सत्ताईस चन्द्रदेव को; भूत, अंगिरा और कृशाश्व ऋषियों को दो-दो; और शेष कन्याएँ पुनः कश्यप को, जो तार्क्ष्य नाम से भी जाने जाते हैं। इन्हीं कन्याओं से, श्रीशुकदेव परीक्षित को बताते हैं, और उनकी सन्तान तथा प्रसन्तान से तीनों लोक चारों ओर से भर गए (श्लोक 1-3)।

श्रीशुक उवाच

ततः प्राचेतसोऽसिकन्यामनुनीतः स्वयम्भुवा ।

षष्टिं सञ्जनयामास दुहितृः पितृवत्सलाः ॥ १ ॥

śrī-śuka uvāca tataḥ prācetaso 'siknyām anunitaḥ svayambhuvā ṣaṣṭiṁ sañjanayām āsa duhitṛḥ pitṛ-vatsalāḥ

अर्थ: श्रीशुकदेव ने कहा: हे राजन्, ब्रह्माजी के अनुरोध पर प्राचेतस-वंशज दक्ष ने अपनी पत्नी असिकनी के गर्भ से साठ कन्याओं को जन्म दिया — प्रत्येक अपने पिता के प्रति कोमल स्नेह से भरी हुई। (स्कन्ध 6, अध्याय 6, श्लोक 1)

श्रीशुकदेव यह अकारण नहीं बताते कि नारद मुनि के साथ हुए विवाद से आहत, जिसमें दक्ष ने अपने पूर्व पुत्र खो दिए थे, इस बार दक्ष ने पुत्रियाँ उत्पन्न करने का निश्चय क्यों किया। एक पुत्री का स्नेह, वैराग्य के पथ पर निकल पड़ने वाले पुत्र के विपरीत, विवाह में समर्पित होकर उन गृहस्थ जीवन में प्रवाहित होना था जहाँ पारिवारिक जीवन की पवित्र व्यवस्था फल-फूल सके। भागवत की अपनी शिक्षा यही है कि जो पत्नी अपने पति के प्रति सतीत्व और भक्ति में स्थिर रहती है, वह बिना किसी पृथक् प्रयास के, पति द्वारा अर्जित समस्त आध्यात्मिक पुण्य में भागीदार बनती है। इस दृष्टि से देखें तो दक्ष की साठ कन्याएँ केवल शोक के पश्चात् एक नई शुरुआत मात्र नहीं हैं: वे प्रजापति की वह सूक्ष्म व्यवस्था हैं जिसके द्वारा धर्म स्वयं विवाह की पवित्रता के माध्यम से आगे बढ़ता है (श्लोक 1)।

धर्म की पत्नियों की सन्तति

धर्म को दी गई दस कन्याएँ — जिनमें भानु, लम्बा, ककुभू, मरुत्वती, वसु, मुहूर्त और सङ्कल्प थीं — ने अनेक दिव्य सन्तानों को जन्म दिया जो सृष्टि के कार्यों का संचालन करती हैं। मरुत्वती से जयन्त उत्पन्न हुए, जो भगवान् वासुदेव के अंश हैं और उपेन्द्र नाम से भी जाने जाते हैं। मुहूर्त से वे देवता उत्पन्न हुए जो प्राणियों को काल के प्रत्येक विभाग के अनुरूप फल प्रदान करते हैं; सङ्कल्प से काम, प्रेम के देवता; और वसु से आठ वसु, जिनमें द्रोण, प्राण, ध्रुव, अग्नि और विभावसु हैं, प्रत्येक अपनी उत्तम सन्तति सहित — हर्ष, शोक और भय के अधिष्ठाता देवता, नगरों और ग्रामों के, अग्नि और दिवस और समस्त प्राणियों की जागृति के अधिष्ठाता। धर्म के इन पौत्रों में दो नाम विशेष रूप से स्मरणीय हैं: अग्नि की पत्नी कृत्तिका से षडानन स्कन्द उत्पन्न हुए, जो आगे चलकर कार्तिकेय के नाम से विख्यात हुए, और वास्तु की पत्नी आङ्गिरसी से विश्वकर्मा उत्पन्न हुए, देवशिल्पी, जिनकी पुत्री आकृति मनु चाक्षुष की माता बनीं। और दोष की पत्नी सर्वरी से शिशुमार उत्पन्न हुए, जिन्हें भागवत स्वयं भगवान् की एक अंश-मूर्ति के रूप में वर्णित करता है (श्लोक 4-16)। इसमें भागवत मौन रूप से सिखाता है कि हमारे दिनों का संचालन करने वाली सामान्य शक्तियाँ — काल, भाव, विचार, प्रकाश के प्रहर — अन्धी यन्त्रणाएँ नहीं, अपितु धर्म की सन्तान हैं, दिव्य व्यवस्था द्वारा नियोजित।

गरुड़, नाग और प्रजातियों की माताएँ

भूत की पत्नी सरूपा ने असंख्य रूपों में रुद्रों को जन्म दिया, जिनमें भव, उग्र और अहिर्बुध्न्य प्रमुख हैं। अंगिरा की पत्नियों ने पितरों तथा अथर्ववेद को अपने पुत्र रूप में स्वीकार किया, और कृशाश्व ने अपनी दो पत्नियों अर्चिष् तथा धिषणा से धूमकेतु और वेदशिरा तथा देवल सहित चार अन्य पुत्रों को उत्पन्न किया। तत्पश्चात् श्रीशुकदेव कश्यप की अन्य पत्नियों के नाम बताते हैं — विनता, कद्रू, पतंगी और यामिनी। पतंगी से पक्षी उत्पन्न हुए और यामिनी से पतंगे; कद्रू ने नागों की अनेक जातियाँ, सर्प-प्राणियों को जन्म दिया; और विनता ने सूर्य के सारथि अरुण को तथा महाबली गरुड़ को जन्म दिया, जो स्वयं भगवान् विष्णु को अपनी पीठ पर वहन करते हैं (श्लोक 17-22)।



विनता महाबली गरुड़ को, जो भगवान् विष्णु के वाहक हैं, तथा सूर्य के सारथि अरुण को जन्म देती हैं, जबकि उनकी बहन कद्रू नागों की अनेक जातियों को जन्म देती हैं (श्लोक 21-22)।

चन्द्रदेव और सृष्टि की माताएँ

सत्ताईस नक्षत्र — कृत्तिका आदि — चन्द्रदेव सोम की पत्नियाँ हैं। दक्ष के शाप से क्षय रोग से ग्रस्त होकर — क्योंकि दक्ष चन्द्रमा के एक पत्नी रोहिणी के प्रति अत्यधिक अनुराग और शेष के प्रति उपेक्षा से क्रुद्ध हुए थे — सोम उनमें से किसी से भी सन्तान न पा सके। दक्ष को पुनः प्रसन्न करके, चन्द्रदेव ने अन्ततः कृष्ण पक्ष में क्षीण होने वाली प्रकाश-कलाओं को पुनः प्राप्त किया (श्लोक 23)। तत्पश्चात् श्रीशुकदेव कश्यप की मुख्य पत्नियों के नाम बताते हैं, जो समस्त प्रजातियों की माताएँ हैं — अदिति, दिति, दनु, काष्ठा, अरिष्टा, सुरसा, इला, मुनि, क्रोधवशा, ताम्रा, सुरभि, सरमा और तिमि। तिमि से जलचर प्राणी उत्पन्न हुए; सरमा से वन्य पशु; सुरभि से गौवंश; ताम्रा से शिकारी पक्षी; क्रोधवशा से सरीसृप; इला से समस्त वनस्पति-जगत्; सुरसा से राक्षस; अरिष्टा से गन्धर्व; और दनु से इकसठ दानव। दनु के पुत्रों में वैश्वानर भी थे, जिनकी पुत्रियाँ पुलोमा और कालका ब्रह्माजी के अनुरोध पर कश्यप को विवाह में दी गई; उनसे साठ हजार भीषण दानव — पौलोम तथा कालकेय — उत्पन्न हुए, जिन योद्धाओं का परीक्षित के अपने पितामह अर्जुन ने स्वर्गलोक में अकेले संहार किया, इन्द्र को प्रसन्न करने हेतु। दनु के ही वंश में विप्रचित्ति ने अपनी पत्नी सिंहिका से एक सौ एक पुत्र उत्पन्न किए, जिनमें ज्येष्ठ राहु थे (श्लोक 23-37)।



दक्ष के शाप से क्षय रोग से ग्रस्त होकर, चन्द्रदेव सोम विनम्रतापूर्वक प्रजापति को प्रसन्न करते हैं और उन प्रकाश-कलाओं को पुनः प्राप्त करते हैं जो पक्षों के अनुसार चमकती और क्षीण होती हैं (श्लोक 23)।

इस विशाल वर्णन के द्वारा भागवत दिखाता है कि जीवन का प्रत्येक क्रम — जल में रहने वाले और आकाश में उड़ने वाले, कोमल गौवंश और उग्र पशु, संसार को पोषण देने वाली वनस्पतियाँ और उसे कष्ट देने वाली शक्तियाँ — एक ही सम्बन्ध-जाल से उत्पन्न होता है, जो सब एक ही प्रजापति की कन्याओं से जन्मा है। इस दृष्टि में समस्त जीव-जगत् भगवान् के अधीन एक विशाल परिवार है।



कश्यप की पत्नियाँ — अदिति, दिति, सुरभि, ताम्रा आदि — प्रत्येक प्रजाति की माताएँ बनती हैं: पशु और पक्षी, नाग और दिव्य प्राणी, तथा पृथ्वी की वनस्पतियाँ (श्लोक 24-28)।

आदिता का वंश और नारायण का अवतरण

अब, ऋषि कहते हैं, क्रमशः उस वंश को सुनो जो अदिति से प्रवर्तित हुआ — क्योंकि इसी वंश में स्वयं परमेश्वर नारायण अपने ही एक अंश से उरुक्रम, महान् पद-विक्षेप के स्वामी, अर्थात् दिव्य वामन के रूप में अवतरित होंगे। ऋषि कहते हैं कि अदिति के कुल बारह पुत्र हुए, और वे उन सबके नाम क्रमशः उसी अन्तिम नाम तक गिनाते हैं (श्लोक 38-39)।

अथातः श्रूयतां वंशो योऽदितेरनुपूर्वशः ।

यत्र नारायणो देवः स्वांशेनावतरद्विभुः ॥ ३८ ॥

विवस्वानर्यमा पूषा त्वष्टा सविता भगः ।

धाता विधाता वरुणो मित्रः शत्रु उरुक्रमः ॥ ३९ ॥

*athātaḥ śrūyatāṁ vaṁśo yo 'diter anupūrvaśaḥ yatra nārāyaṇo devaḥ svāṁśēnāvātarad vibhuḥ
vivasvān aryamā pūṣā tvaṣṭātha savitā bhagaḥ dhātā vidhātā varuṇo mitraḥ śatru urukramaḥ*

अर्थ: अब क्रमशः उस वंश को सुनो जो अदिति से प्रवर्तित हुआ, जिसमें सर्वशक्तिमान् परमेश्वर नारायण स्वयं अपने ही एक अंश से अवतरित हुए। अदिति के पुत्र हैं — विवस्वान्, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, शत्रु, और महान् पद-विक्षेप के स्वामी उरुक्रम। (स्कन्ध 6, अध्याय 6, श्लोक 38-39)



श्रीशुकदेव भविष्यवाणी करते हैं कि अदिति के इसी वंश में परमेश्वर नारायण एक अंश-रूप में अवतरित होंगे — वह दिव्य वामन जो लोकों को अपने महान् पद-विक्षेपों से नाप लेते हैं (श्लोक 38)।

सूर्यदेव विवस्वान् से भद्रादेव उत्पन्न हुए, जो इस युग के मनु बने, तथा यम और यमी नामक युग्म; और जब उनकी पत्नी ने पृथ्वी पर घोड़ी का रूप धारण किया, तब देवताओं के चिकित्सक युग्म अश्विनीकुमार उत्पन्न हुए। उनकी छाया-पत्नी छाया से शनैश्चर, शनि ग्रह, तथा एक और मनु, सावर्णि, और कन्या तापती उत्पन्न हुई। इस प्रकार यह वर्णन अदिति के वंश की शाखाओं में उतरता हुआ त्वष्टा तक पहुँचता है, जिनकी पत्नी

रचना ने दो पुत्रों को जन्म दिया — सन्निवेश और महाबली विश्वरूप (श्लोक 40-44)। और यहीं वंशावली आने वाली कथा की ओर मुड़ती है: देवगण, अपने ही आचार्य बृहस्पति द्वारा, जिनका उन्होंने अपमान किया था, त्याग दिए जाने पर, विश्वरूप को अपना आचार्य चुनते हैं, यद्यपि वे उनके शत्रुओं, दिति-पुत्रों के भानजे थे (श्लोक 45)।

तं वव्रिरे सुरगणा स्वस्त्रीयं द्विषतामपि ।

विमतेन परित्यक्ता गुरुणाङ्गिरसेन यत् ॥ ४५ ॥

taṁ vavrire sura-gaṇā svasrīyaṁ dviṣatām api vimatena parityaktā guruṇāṅgirasena yat

अर्थ: देवगणों ने विश्वरूप को अपना पुरोहित चुना, यद्यपि वे उनके शत्रुओं की बहन के पुत्र थे, क्योंकि वे अपने आचार्य अंगिरा-पुत्र बृहस्पति द्वारा, जिनका उन्होंने अपमान किया था, त्याग दिए गए थे। (स्कन्ध 6, अध्याय 6, श्लोक 45)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. समस्त सृष्टि एक ही दिव्य व्यवस्था से उत्पन्न होती है। एक ही प्रजापति की कन्याएँ देवों और असुरों, पक्षियों और पशुओं, वनस्पतियों और नागों की समान रूप से माताएँ बनती हैं — समस्त जीव-जगत् की एक ही परिवार के रूप में, भगवान् के अधीन, एक दृष्टि (श्लोक 1-3, 24-28)।
2. हमारे जीवन का संचालन करने वाली शक्तियाँ पवित्र हैं, अन्धी नहीं। काल, भाव, विचार, प्रेम, प्रकाश और अन्धकार के प्रहर — सब यहाँ धर्म की सन्तान और स्वर्ग की व्यवस्था के रूप में नामित हैं, जो हमें सृष्टि को उद्देश्यपूर्ण देखने का निमन्त्रण देते हैं (श्लोक 4-16)।
3. आध्यात्मिक गुरु का अपमान हानि लाता है। देवगण, अपने आचार्य बृहस्पति का अपमान करके, मार्गदर्शन से रहित हो जाते हैं और एक संकटपूर्ण चुनाव के लिए विवश होते हैं — एक चेतावनी जो नामों की पूरी सूची के नीचे मौन रूप से बहती है (श्लोक 45)।
4. शाप और उसका उपचार भी दिव्य व्यवस्था के भीतर घटित होते हैं। चन्द्रदेव का क्षय और आंशिक पुनर्प्राप्ति, दक्ष को प्रसन्न करने से प्राप्त, यह दिखाते हैं कि चन्द्रमा के घटने-बढ़ने की लय भी सृष्टि की नैतिक व्यवस्था में गुँथी है (श्लोक 23)।
5. सृष्टि का लेखा भगवान् का स्मरण है। समस्त नामों के ऊपर यह प्रतिज्ञा स्थित है कि अदिति के वंश में स्वयं नारायण अवतरित होंगे — जिससे लोकों की वंशावली अन्ततः भगवान् के अपने अवतरण की परम्परा बन जाती है (श्लोक 38)।
6. धार्मिक विवाह स्वयं में एक मार्ग है, वैराग्य से न्यून नहीं। दक्ष इस बार पुत्रियाँ इसलिए उत्पन्न करते हैं ताकि गृहस्थ जीवन, न कि वह वैराग्य-पथ जिसने उनके पुत्रों को छीन लिया, धर्म को आगे बढ़ाए — और परम्परा यह सिखाती है कि पत्नी की भक्ति उसे पति के आध्यात्मिक फल में पूर्ण भागीदार बनाती है (श्लोक 1)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

नामों की एक लम्बी सूची, प्रथम दृष्टि में, शास्त्र का सबसे कम भक्तिपूर्ण भाग प्रतीत हो सकती है — पूर्वजों और सन्तानों का एक शुष्क लेखा। किन्तु भागवत इस अध्याय को प्रकाश के एक ही वाक्य से आवृत करता है: “अदिति के उस वंश को सुनो, जिसमें स्वयं भगवान् अवतरित हुए।” सहसा समस्त सूची रूपान्तरित हो जाती है। नामित प्रत्येक प्राणी — पतंगी से जन्मे पक्षी, इला से उपजी वनस्पतियाँ, सुरभि की गौएँ, कद्रू के नाग — उस सृष्टि से सम्बद्ध है जिसे भगवान् ने केवल दूर से गति नहीं दी, अपितु जिसमें उन्होंने स्वयं प्रवेश किया, उसी की एक वंश-परम्परा में जन्म लेकर। इसमें हमारे लिए सान्त्वना है। हम भी एक परिवार-वंश में नाम हैं, माता-पिता और सन्तानों की एक विशाल शृंखला के छोटे कड़ियाँ, जो स्मृति से भी परे पीछे तक फैली है। यह अध्याय हमें बताता है कि ऐसी शृंखला निरर्थक नहीं है: यही वह वस्त्र है जिसके द्वारा दिव्यता प्रकट होना चुनती है। सृष्टि में अपने स्थान का सम्मान करना, तुच्छ से तुच्छ प्राणी को भी अपना बन्धु देखना, और यह स्मरण रखना कि स्वयं भगवान् हमारे बीच जन्म लेने को तत्पर हुए — यही वह मौन भक्ति है जो नामों के एक पृष्ठ में छिपी है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, सृष्टि की विशालता को अपने हृदय को कृतज्ञता की ओर मोड़ने दें। कुछ क्षण अपने आस-पास के जीवों को देखने में लगाएँ — एक पक्षी, एक वृक्ष, एक पशु, एक अन्य मनुष्य — और स्मरण करें कि शास्त्र उन सबको उसी दिव्य व्यवस्था की सन्तान मानता है जिसके आप भी अंग हैं। मौन रूप से उस भगवान् को धन्यवाद का एक शब्द अर्पित करें जो प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक जीवन के स्रोत हैं, और जिन्होंने अपने ही प्राणियों के बीच अवतरित होना चुना। समस्त प्राणियों को भगवान् के अधीन अपना बन्धु देखने में, आप उस विनम्रता और श्रद्धा का अभ्यास करते हैं जो यह अध्याय, अपनी नामों की लम्बी सूची के नीचे, इतनी कोमलता से सिखाता है।

उपसंहार

षष्ठ स्कन्ध का छठा अध्याय सृष्टि के महान् वंश-वृक्ष को उद्घाटित करता है — दक्ष की साठ कन्याएँ और वह असीम सन्तति जिनके द्वारा देव और असुर, पशु और पक्षी, वनस्पतियाँ और ग्रह लोकों को भरने आए। इसके नामों के विस्तार के नीचे एक ही सन्देश स्थित है: कि समस्त जीवन एक ही दिव्य व्यवस्था से बहता है, कि हमारे दिनों को आकार देने वाली शक्तियाँ पवित्र हैं, और कि अपराध और शाप भी भगवान् की योजना के भीतर घटित होते हैं। सबसे बढ़कर, यह अध्याय कृपा की ओर संकेत करता है — क्योंकि अदिति के इसी वंश में स्वयं नारायण अपने प्राणियों के बीच अवतरित होंगे। जैसे-जैसे यह स्कन्ध अगली कथा — देवों के अपने आचार्य को खोने और विश्वरूप को चुनने — की ओर बढ़ता है, हम ऋषि के उस उज्ज्वल स्मरण को साथ ले चलते हैं कि सृष्टि का लेखा, आदि से अन्त तक, भगवान् का स्मरण है।

श्रीमद्भागवतम् की दिव्य विद्या हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ तथा साभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), षष्ठ स्कन्ध, षष्ठ प्रवचन।

- शृंखला: Srimad Bhagavatam Wisdom · Biswa Sanatan Dharma Seva Trust।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन तथा अनुशंसा का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में और उनके अर्थ सारांश के रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा संबद्धता या समर्थन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-6-chapter-6-progeny-daughters-of-daksha-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

